ग्रामेष्वात्मविसृष्टेषु यूपचिह्नेषु यज्वनाम् ।

अमोघाः प्रतिगृह्णन्तावर्घ्यानुपदमाशिषः ।।44।।

अन्वय आत्मविसृष्टेषु यूपचिह्नेषु ग्रामेषु यज्वनाम् अमोघाः आशिषः अर्घ्यानुपदं प्रतिगृह्णन्तौ (जग्मतुः)।

अनुवाद स्वयं (याज्ञिकों को दान में दिए हुए और जिनमें यज्ञ के स्तम्भ गड़े हुए थे, ऐसे ग्रामों में सांज्ञिकों के अर्घ्य (पूजा विधि) स्वीकार करने के पश्चात् याज्ञिकों (विधिपूर्वक यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों) के सफल आशीर्वाद को लेते हुए (वे दोनों चले जा रहे थे)।

टिप्पणियां

आत्मविसृष्टेषु आत्मना विसृष्टेषु (विसृष्टः वि उपसर्ग सृज् धातु क्त) (सप्तमी बहुवचन), स्वयं के द्वारा दान में दिए हुए। अपने द्वारा छोड़े हुए अर्थात् दान में दिए हुए। विसृष्ट का अर्थ है 'दिए गए'।

यूपचिह्नेषु यूपा एवं चिह्नानि येषां ते (बहुव्रीहि), तेषु। वे ग्राम जिनमें यज्ञ-स्तम्भ गड़े थे, जिनसे प्रतीत होता था कि वे राजा द्वारा दान में दिए हुए गांव हैं। भूमिदान महादानों में गिना जाता है।

यूप यज्ञ-स्तम्भ। यज्ञ भूमि में गड़ा हुआ वह स्तम्भ जिसके साथ यज्ञ बलि देते समय बलिपशु बांधा जाता है। यज्ञ पूर्ण हो जाने पर भी इन बलिस्तम्भों को उखाड़ा नहीं जाता था। वे यज्ञ कर्म के चिन्ह के रूप में विधमान रहते थे। राजा ने यात्रा करते समय इन

चिन्हों को देखकर जान लिया कि ये उसके ही द्वारा दान में दिए हुए गाँव हैं। यज्ञ में पशु-बलि उस काल में स्वीकृत थी। देखिए.**''वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति।''**

यज्वनाम् यज्ञ करने वालों, याज्ञिकों की। यजन्ते इति यज्वानः।

अमोघाः न मोघाः (बन्ध्याः असफलाः) इति अमोघाः, निष्फल न होने वाले। देखिए ''ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति।'' (उत्तररामचरितम्)

प्रतिगृह्णन्तौ प्रति उपसर्ग ग्रह धातु शतृ प्रत्यय प्रथमा विभक्ति, द्विवचन। (वे दोनों) याज्ञिकों के आशीर्वादों को ग्रहण करते हुए।

अर्घ्यानुपदम् अर्घार्थं-द्रव्यम् अर्घ्यम् (किसी की पूजा या सम्मान करने के लिए अपेक्षित सामग्री अर्थात् राजा-रानी के प्रति सम्मान को सूचित करने के लिए उन्हें अर्पित की गई वस्तु) अर्घयत् अर्घ्य, अर्घ्यस्य अनुपदम् इति। अर्घ्य को स्वीकार करने के पश्चात्।